चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय

'' अकेला पलाश '' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

४.१ *समस्या और साहित्य* -

वर्तमान युग कलियुग है या नहीं इस बारे में मतभेद हो सकता है किन्तु इसमें दो मत संभव नहीं है कि वर्तमान युग समस्याओं का युग है। " वर्तमान युग की समस्याएँ तो कुछ दूसरी ही रंग में रंगी हुई है। कारण यह है कि आज का व्यक्ति यदि एक ओर पुराने संस्कारों और मान्यताओं से बँधा रहना चाहता है तो दूसरी ओर उन्हें छोड़कर नये संस्कार ग्रहण करने का संघर्ष भी वह निरंतर कर रहा है। इस संदर्भ में वह कहीं-कहीं पथभ्रष्ट हो गया है। वस्तुतः वर्तमान युग समस्याओं का युग है ।''[१] साहित्य समाज का प्रतिफलन है, वह मानवनिर्मित हो गया है। मानव जिस समाज में रहता है वहा विभिन्न समस्याएँ दिखाई देती हैं। मनुष्यजीवन का कोई भी कोना ऐसा नहीं जहा आज समस्याओं का अस्तित्व न हो । मनुष्य जीवन की समस्याएँउसकी चित्तवृत्तियों के विकास के साथ-साथ निरंतर बढ़ती चली जा रही है। मनुष्य की इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है, यही अतृप्ति कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल-सा फैली

---

१ *डॉ. विमला भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य, पृष्ठ ३५।*

देती है। वर्तमान युग में तो समस्याएँ जीवन में इतनी बढ़ गई है कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्याओं की श्रृंखला बन गया है। " सहहितेन की भावना से युक्त साहित्य को भी समस्याओंनें जकड़ लिया है।"[१] समस्या साहित्य ने जहाँ से चली आ रही मानव की आस्थाओं और प्राचीन रूढ़ियों को खण्डित किया है, वहाँ उसे मानवता का पाठ भी पढ़ाया है। समस्या साहित्य कुण्ठा, अवसाद और निराशा के जीवन में नई चेतना, नया आत्मबल तथा नया साहस भर देता है। जिन समस्याओं में मनुष्य पीसता जा रहा था और समाधान का कोई रूप ही दिखायी नहीं देता था उन सबपर समस्या साहित्यकारों ने अपनी कलम चलायी है। वर्तमान युग में साहित्य को युगानुरूप होना अनिवार्य है तथा साहित्य में समस्याओं का चित्रण होना ही मानवशास्त्र की आवश्यकता है। डॉ. विमला भास्कर के मतानुसार - " समस्याओं का स्वरूप आज मकड़ी के उस जालसदृश्य लग गया है जो देखने में तो अलग-अलग तन्तुवाय दिखाई देते है परंतु एक दूसरे से इस तरह निगुन्थित हैं कि उन्हें अलग किया ही नहीं जा सकता ।"[२] वर्तमान युग में समस्या कठिन पहेली के सिवाय और कुछ नहीं। हिंदी साहित्य में समस्याओं के चित्रण का प्रयास भारतेन्दु युग में ही गया था।

तात्पर्य यह कि जब तक मनुष्य है तक तक समस्या रहेगी, समस्या है तब तक साहित्य लिखा जायेगा । अत: समस्या और साहित्य इन दोनों का चोली दामन-सा अटूट रिश्ता नाता रहेगा ।

---

१ *डॉ. विमला भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य, पृष्ठ ६ ।*

२ *वही, पृष्ठ १०।*

४.२ *समस्या साहित्य की अनिवार्यता –*

मनुष्य जीवन में समस्याओं एवं विड़म्बनाओं के विकास ने आज समस्या साहित्य की रचना को अपरिहार्य बना दिया है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एव आर्थिक कोई भी परिस्थिति इससे, अछूती नहीं रहीं। आज स्वतंत्रता को उपलब्ध हुए पचास वर्ष पूरे हो चुके हैं, किन्तु समस्याओं से पीछा अभी तक नहीं छूटा और लगता है कि न ही छूट पायेगा ।

साहित्य में समसामायिक तथा देश–काल एवं साहित्यिक परंपराओं के अनुकूल समस्याओं का चित्रण होना ही चाहिए, यह केवल युग की अनिवार्यता नहीं अपितु मानव जीवन की आवश्यकता है। वर्तमान युग में समस्या साहित्य की आवश्यकता का महत्त्व बढ़ रहा है। मानव अपने अधिकारों का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहता है, जिससे मानव जीवन में स्वत: समस्याएँ प्रवेश करती जा रही हैं। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी तथा कविता आदि साहित्य की कुछ ऐसी विधाएँ है जिनके द्वारा समस्याओं से समाज को अवगत किया जा सकता है। शिक्षित वर्ग साहित्य को पढ़कर समस्याओं से अवगत हो सकता है। इसके कारण व्यक्तिगत जीवन के साथ–साथ राष्ट्र और समाज का उससे परिचय हातेा है। अशिक्षित वर्ग के लिए नाटकों को मंचित कर समाज को इससे परिचित कराया जा सकता है। समाज कल्याण समिति की गाड़ियाँ गाँवों में जाकर इनसे संबंधित एकांकियों को चित्रित कर रही है। जिसमें उन्हें इन समस्याओं के समाधान के लिए बहुत अधिक सहायता मिल रही है।

आज के युग में समस्या साहित्य का निर्माण होना अंत:ता अनिवार्य हो गया है जो कि जीवन और राष्ट्र से संबधित आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी समस्याओं का सुलझे हुए रूप में

प्रस्तुत करें। साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समस्याओं से परिचित कराने पर ही राष्ट्र और समाज का उत्थानहोता है। जीवन की सभी स्थितियों का चित्रण करने के लिए साहित्यकार प्रतिबध्द रहता है। आज का साहित्यकार इस दिशा में पूर्णत: सचेत है।

४.३ *नारी समस्याओं का चित्रण -*

प्रारम्भिक काल में नर और नारी समानाधिकारी थे। नारी स्वतंत्र थी परंतु सभ्यता के विकास के साथ-साथ पुरूषों में स्वार्थपरता की भावना नारियों की तुलना में अधिक आयी । नारियाँ पुरूषों के अधीन हो गई, उन्हें पुरूषों के अनुकूल आचरण करने के लिए विवश किया गया ।" कालान्तर में नारियाँ स्वतंत्र भी हुई। रामायण युग इसी का प्रतीक है किन्तु पुन: वे सामाजिक नियमों में बाँध दी गई। इस प्रकार नारियों का समाज में उत्थान पतन होता रहा । सम्प्रति नारियों की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रही । नारियों में शिक्षा का विकास हुआ है, बहुत अंशों में नारियों की आर्थिक स्थिति सुधरी है तब भी प्राय: नारियाँ सामाजिक बंधनों में बंधी हैं और वे ही उनकी अनेक सामाजिक समस्याएँ हैं। ''[१] पुरूष प्राधान संस्कृति आने के कारण नारी की स्थिति हीन बनी। " सेवा और त्याग की मूर्ति नारी को भारतीय पुरूषप्रधान समाज द्वारा शोषित, पीडित, अशिक्षित और हीनवृत्ति का शिकार होना पड़ा।''[२] आधुनिक नारियाँ बहुत सीमातक स्वतंत्र हुई हैं किन्तु आज भी नारी अनेक समस्याओं से पीडित है। " भारतीय समाज में समस्या सदैव नारी के साथ रही है, क्योंकि

---

१ *डॉ. रामेश्वर नारायण ' रमेश ' - साहित्य में नारी : विविध सदंर्भ, पृष्ठ १४।*

२ *प्रा. अर्जुन धरत - नागार्जुन के नारी पात्र, पृष्ठ ६८।*

पारंपारिक जीवन-मूल्यों के निर्वाह को सदैव नारी के साथ जोड़ा गया है।''[१] बालविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह, विधवाविवाह और पुनर्विवाह की समस्याएँ नारी-जीवन में बनी हुई है। नारी पर्दाप्रथा के कारण घर में बंदिनी बना दी गई । दहेज की समस्या ने पुत्री के जन्म को ही अप्रिय बना दिया । बालविवाह और अनमेल विवाह के कारण विधवा और वेश्या समस्याओं का जन्म हुआ । '' समस्याएँ अधिकांशता सामाजिक क्षेत्र में जन्म लेती हैं और उनका संबंध अधिकतर नारी जाति से ही होता है। विविध समस्याओं और कुप्रथाओं ने नारी जाति को बड़ी हीनावस्था में पहुँचा दिया । ''[२] डॉ. शैल रस्तोगी का यह कथन सही है । वैधव्य का एकाकीपन और उपेक्षाभाव नारी की अनेक समस्याओं का जन्म देता है। स्त्री का सुंदर होना भी आज एक समस्या बनी है। नौकरी पेशा नारी और उचशिक्षित नारियों की समस्या आधुनिक युग में अधिक मात्रा में दिखायी देती है।

४.४ *उपन्यासों में समस्या का चित्रण –*

उपन्यास का आज का स्वरूप समस्यामूलक है। डॉ. महेन्द्र भटनागर के अनुसार – " वास्तव में देखा जाए केवल एक समस्यावाले उपन्यास भी समस्यामूलक उपन्यास के नाम से पुकारे जाने के अधिकारी है। दूसरे प्रकार के उपन्यास समस्यामुलक उपन्यास की श्रेणी में इस कारण परिगणित किये जाते हैं क्योंकि उपन्यासकार का ध्यान उनमें भी समस्याओं की ओर ही केंद्रित रहता है। स्वरूप में कुछ भिन्नता होते हुए भी उद्देश्य

---

१ *डॉ. उमा शुक्ल – मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी : विविध भूमियाँ, पृष्ठ १०२।*

२ *डॉ. शैल रस्तोगी – हिंदी उपन्यासों में नारी, पृष्ठ २६८।*

में एकता अवश्य मिलती है। इसके अतिरिक्त वे एक दूसरे के अत्याधिक निकट भी है विरोधी होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।''[१] वर्तमान युग में समस्यामूलक उपन्यासों का प्रचार बढ़ता जा रहा है। उपन्यासकार सामाजिक प्राणी होने के कारण जीवन की अनेक समस्याओं का उद्‌घाटन तथा उनका समाधान करने का प्रयास साहित्य के माध्यम से कर रहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते है - " लोक या किसी जनसमाज के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिन्त्य परिस्थितियाँ खड़ी होती हैं, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी-कभी विस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यास का काम है। ''[२] प्रेमचंद साहित्य का उद्‌देश्यही समस्याओंपर विचार एवं उनका समाधान उपस्थित करना घोषित करते है - ' अब वह (साहित्य) केवल नायक नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता किन्तु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करना है और उन्हें हल करना है।''[३]

उपन्यासकार दुनिया की समस्या को साहित्य का विषय बनाता है। " उपन्यासकार एक सामाजिक प्राणी होता है, वह जीवन की विविध समस्याओं और परिस्थितियों से प्रभावित होता रहता है और तभी अपनी रचनाओं में वह उस प्रभाव को प्रदर्शित करता है। आज का युग विषम समस्याओं का युग है। जैसे-जैसे परिस्थितियाँ बदल रही हैं वैसे-वैसे ही अनेक नई-नई समस्याएँ मनुष्य के सामने आ रही हैं। मनुष्य का मन अभिव्यक्ति के साधन ढूँढ़ता है और उन साधनों के मिल जाने पर

---

१ *डॉ. महेन्द्र भटनागर - समस्यामूलक उपन्याकार : प्रेमचंद, पृष्ठ १६१।*

२ *आचार्य रामचंद्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३६६।*

३ *प्रेमचंद - कुछ विचार, पृष्ठ १०६।*

अनुभतियाँ प्रकाश में आती जाती है। साधारण मनुष्य परिस्थितियों से प्रभावित होता है,समस्याएँ उसे भी उलझाती हैं किन्तु वह उन समस्याओं को झेलता हुआ स्वयं तक ही सीमित रह जाता है जबकि साहित्यकार अपनी उलझनों को साहित्य में सजीव कर देता है। साधारण मनुष्य और साहित्यकार में यहीं अंतर है। ''[१] हिंदी उपन्यासकारों ने नारी जीवन की विविध समस्याओंपर प्रकाश डालकर अनेक उपयोगी समाधान प्रस्तुत किए है और नारियों को अपनी सहानुभूति देकर वास्तविक स्थिति का परिचय दिया है और पाठकों के मन की करूणा तथा श्रध्दा जगाने का प्रयास किया है।

४.५. *' अकेला पलाश ' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ -*

आज परंपरागत एवं आधुनिक वैचारिक जीवन मूल्यों में संघर्ष के कारण कुछ समस्याएँ निर्माण हो चुकी है। वर्तमान काल में युवा पीढ़ी जाति,आयु, आर्थिक स्तर आदि मानने को तैयार नहीं हैं। बहुत से युवक युवती प्रेम के कारण आपस में विवाह करना चाहते है लेकिन उनके माता-पिता जातिवाद तथा अन्य करणों से उसमें रोडे अटकाते हैं। उनके विवाह का सख्त विरोध करते है, परिणामत संघर्ष की स्थिति निर्माण होती है। जाति-प्राथा के कारण वर मिलने में व्ठिनाई होती है और दहेज का अभिशाप बढ़ता जाता है। कभी-कभी लड़कियाँ आत्महत्या करती हैं या बड़ी आयुतक अविवाहीत रहती हैं या उनका अनमेल या बूढ़ों के साथ विवाह करा दिया जाता है, जिससे नारी को शारीरिक, मानसिक यातनाओं का शिकार होना पड़ता है। इन रूढ़ि प्रथाओं के कारण वैवाहिक जीवन में कई समस्याएँ निर्माण होती हैं। साथ ही बदलते सामाजिक परिवर्तन नई पीढ़ी में

---

१ *डॉ. शैल रस्तोगी - हिंदी उपन्यासों में नारी, पृष्ठ २६७।*

संघर्ष का वातावरण निर्माण करते हैं। राजनीति में भ्रष्ट नेता, अधिकारी लोग अपने स्वार्थ के लिए गरीब, सामान्य जनतापर अन्याय करते है, जिसके कारण युवा-पीढ़ी में असंतोष का वातावरण निर्माण होता है और इसीकारण कई सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है।

' अकेला पलाश ' उपन्यास की लेखिका मेहरुन्निसा परवेज जी ने अपने उपन्यास में इन्हीं तत्कालीन समस्याओं का चित्रण किया है। नारी मन की चतुर चितेरी मेहरुन्निसा परवेज ने नारी को अपने उपन्यासों का आधार बनाया है। ' अकेला पलाश ' यह उपन्यास भी नारी प्रधान उपन्यास ही है। उनके इस उपन्यास में विभिन्न समस्याएँ मिलती है और समस्याओं के ताने-बाने को देखकर मेहरुन्निसा परवेज को समस्यामूलक उपन्यासकार कहना उचित लगता है। इस उपन्यास की आलोचना के बाद ऐसा महसूस होता है कि मेहरुन्निसा परवेज का उद्देश्य समस्याओं का चित्रण करना नहीं था तो नारी के दु:खों का वर्णन करना रहा है। यह नारी प्रधान उपन्यास होने के कारण इसमें अधिकतर नारी समस्याओं का ही विश्लेषण हुआ है।

' अकेला पलाश ' उपन्यास में प्रधानता निम्नांकित समस्याओं का चित्रण हुआ है -

४.५.१ *वैवाहिक समस्याएँ* -

मेहरुन्निसा द्वारा लिखित ' अकेला पलाश ' में वैवाहिक समस्या तथा उनके परिणामों का गंभीर रूप से विवेचन किया गया है। डॉ. महेन्द्र भटनागर लिखते है - " विवाह का महान आदर्श आज समाज से लुप्त हो गया है। दाम्पत्य जीवन का सुख आज दुर्लभ वस्तु बन गया है।

वैवाहिक असंगतियाँ आज घर-घर में विद्यमान हैं, जिन्होंने स्त्री पुरूषों के संबंधों को विकृत तो किया ही है, सम्राज की शांति भी भंग कर रखी है। ''[१] सुधारानी श्रीवास्तव के मतानुसार - " वयस्कता विवाह का आधार है। ''[२] विवाह समाज की अनिवार्यता है किन्तु आज की विषम परिस्थितियों में इस अनिवार्यता ने भी समस्या का रूप दे दिया है। विवाह के संदर्भ में डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल का कथन है - " समाज से मान्यता प्राप्त कुछ धार्मिक कृत्यों और विधियोद्वारा स्त्री-पुरूष का विधिवत मिलन ही विवाह का संस्कार है जिसका उद्देश्य धर्मकार्य, पुत्रप्राप्ति एवं रति के प्रयोजन को पूर्ण करता है।"[३] विवाह तो दो व्यक्तियों का शारीरिक एवं आत्मिक मिलनही नहीं होता अपितु दो भिन्न परिवार ,उनके आचार-विचार, रहन-सहन, आदि का भी मेल हो जाता है। स्त्री-पुरूष के विवाहोत्तर आकर्षण में किन-किन दुष्परिणामों की सम्भावना हो सकती है और अप्रत्यक्ष रूप से दण्ड नारीको ही भुगतना पड़ता है। प्रेमविवाह, कुलगोत्र, परित्यक्ता की समस्या, अन्तर्जातिय विवाह की समस्या और विधवा समस्या आदि समस्याओं वैवाहिक समस्याओं के अंतर्गत मेहरुन्निसा परवेज जी ने चित्रित किया है।

४.५.१.१ *प्रेम विवाह की समस्या -*

हिंदू समाज मनुष्य के विवाह परे प्रेम को विभेद दृष्टि से देखता है। " परम्परागत आदर्शों में विश्वास करनेवाले परिवार के

---

१ *डॉ. महेन्द्र भटनागर - समस्यामूलक उपन्यासकार: प्रेमचंद , पृष्ठ १४४।*

२ *सुधारानी श्रीवास्तव - भारत के महिलाओं की वैधानिक स्थिति, पृष्ठ २७६।*

३ *डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल - हिंदू विवाह मीमांसा, पृष्ठ २५।*

युवक-युवतियाँ पिता के आश्रय में ही वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते थे। यदि वे इस आदर्श का उल्लंघन कर स्वतंत्र रूप से प्रेम संबंध स्थापित करना चाहते तो समाज उन्हेंजाति से बहिष्कृत कर देता । वे अपने अतृप्त प्रेम को लेकर समाज की सड़कोंपर भटका करते अथवा आत्मघात कर लेते । स्वच्छन्द प्रेम भारतीय समाज को स्वीकार्य नहीं ।''[१]

नाहिद बाजी एक डॉक्टर है, अपने परिवार की जिम्मेदारीयों के कारण उसने बहुत बड़ी आयुतक विवाह नहीं किया है। वह बहुत अकेलापन महसूस करती है। डॉ. महेश अग्रवाल से उसे प्रेम हो जाता है, नाहिद महेश के साथ विवाह करना चाहती है। नाहिद मुसलमान है और महेश हिंदू और इसीकारण नाहिद के अब्बा इस विवाह से इन्कार करते है। नाहिद प्रेम की आशा रखकर अपने पिता का घर त्यागकर महेश के साथ विवाह करती है।उसकी अपेक्षा पूरी नहीं हो पाती। ससुराल में उसे जाति को लेकर दिन-रात सास के ताने सुनने पड़ते है, छुआ छूत की समस्या का सामना करना पड़ता है। नाहिद महसूस करती है कि प्यार के सारे सपने झूठे निकले, वह धोखा खा गयी है। प्रेम विवाह के कारण उसे मायकेवाले और ससुरालवालों की नफरत सहनी पड़ती है। नाहिद अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए तहमीना से कहती है - " मेरे ही सपने मुझे चुभ गय हैं और उनका जहर अंदर-ही-अंदर मुझे सड़ा रहा है, गला रहा है। अब काँटा निकलनेवाला नहीं , मुझे कब्र में सुलाकर ही दम लेगा। अब मेरी स्थिति यह है धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। मायकेवालों ने तो मुझे जीते जी दफना ही दिया, मुझपर ढेरों मिट्टी डाल गये है और ससुराल में सुबह से लेकर शाम तक शिवय दुतकार के कुछ नहीं

---

१ *डॉ. श्रीनारायण सिंह - हिंदी औपन्यासिक कथानकों में मूलस्रोत , पृष्ठ ५७।*

मिलता।''[१]

इस तरह नाहिद को प्रेमविवाह के कारण दु:ख का ही सामना करना पड़ता है। अपनों के प्यार के लिए, स्नेह और ममता के लिए वह तरसती रहती है। जिस सुख,आनंद की अपेक्षा से उसने यह विवाह किया था, वह असफल हो जाता है और जीवनभर उसे खुशियों के लिए तरसना पड़ता है। यह डॉक्टर होने के बावजूद इस विवाह के बाद उसका आत्मविश्वास टूटता हुआ नजर आता है।

४.५.१.२ *अनमेल विवाह* -

अनमेल विवाह का अर्थ साधारणत: पति और पत्नी की आयू में अंतरवाला विवाह समझा जाता है। दहेजप्रथा और बालविवाह के कारण अनमेल विवाह हो जाता है। " बालविवाह तथा दहेजप्रथा ही अनमेल विवाह की जन्मदात्री है। ''[२] अनमेल विवाह में अपना मन मारकर, इच्छा-आकांक्षाओं का गला घोंटकर पति का स्वीकार करना पड़ता है। अनमेल विवाह में युवती का शोषण होता है। " भारतीय समाज में अनमेल-विवाह एक भयंकर सामाजिक दोष है। नारी परतंत्र है, अत: बहुधा उसी का शोषण हुआ है।''[३]

अनमेल विवाह में पति-पत्नी में उम्र, वैचारिक, भावनिक तथा आर्थिक स्तर आदि में असमानता होती है। हिंदू संस्कृति में कन्या के विवाह

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १७१।*

२ *डॉ. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी-जीवन की समस्याएँ, पृष्ठ २६।*

३ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०१।*

को आवश्यक बताया है। प्राचीन काल से ही पुत्रीजन्म को पिता बोझ समझता आया है। इस बोझ से छुटकारा पाने के लिए वह हमेशा प्रयत्नशील रहता है। उसे किसी को सौंपकर छुटकारा पाना चाहता है। डॉ. कलावती प्रकाश कहती है - " अनमेल विवाह भारतीय हिंदू समाज के लिए अभिशाप सिध्द हुआ है। इसका मूल दहेज प्रथा में ढूँढा जा सकता है। यह प्रथा उस समय और भी दु:खदायी हो जाती है, जब वर वृध्द हो और वधु युवती ।"[१]

वैवाहिक जीवन मे अनमेल विवाह के कारण नारी के सामने समस्याएँ खड़ी होती है। स्त्री पति का धन नहीं, प्रेम चाहती है। यदि पति से उसे वैवाहिक सुख नहीं मिलता तो अपने आप वह भटक जाती है। वह पति को पूर्ण रूप से पाना चाहती है और यदि उसकी यह इच्छा पूरी करने में असमर्थ हो तो वह हताश बनती है। यदि दोनों के उम्र में अंतर बहुत हो तो दोनों में हमेशा अनबन होती रहती है, जिससे स्त्री का जीवन बड़ा ही दु:खदायी, कष्टदायी बनता है। इस वातावरण से तंग आकर कभी-कभी वह घरसे भाग निकलती है, या किसी दूसरे मित्र के प्रेमी के साथ संबंध बना लेती है।

' अकेला पलाश ' उपन्यास की नायिका तहमीना को भी अनमेल विवाह जैसी जटिल समस्या का सामना करना पड़ा है। इस समस्या के दुष्परिणामों के कारण उसका पूरा जीवन बरबाद हो जाता है। पन्द्रह साल की कम आयु में उसका विवाह एक ऐसे व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है, जो उसके पिता की उम्र का है। इस विवाह के कारण उसके हसीन और कोमल सपने टूट जाते है और उसे कठोर वास्तव का सामना

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०३।*

करना पड़ता है - " कितने सुखद सपने ये, स्मृतियाँ थीं जो एक डिब्बी में बंद थी, पर जब डिब्बी खुली, तहमीना ने देखा सपने हवा की तरह उड़ गये और खाली डिब्बी उसके सामने थी । सपनों से भरी नींद टूटी भी तो यथार्थ की कठोर धरती पर ।''[१]

तहमीना इस विवाह को अप्ना नसीब समझकर स्वीकार तो कर लेती है लेकिन जीवनभर उसे अपने सुख और हक के लिए तरसना पड़ता है।उसका पति जमशेद न तो उसकी मानसिक जरूरतें पूरी कर सकता है और न ही शारीरिक । वह प्रेम और शरीर-सुख से वंचित रहती है। दोनों की उम्र में काफी अंतर होने के कारण जमशेद कभी उसे समझ नहीं पाता और दोनों में कभी न मिटनेवाली दूरियाँ निर्माण होती है। तहमीना हमेशा यह महसूस करती है - " जमशेद एक ऐसे रोशनदान हैं जिन्हें उसके नन्हे हाथ कभी नहीं छू सके । वह सारी उम्र एड़ियाँ उचका-उचकाकर उन्हें छूने भर की कोशिश करती रहीं पर इसमें वह कभी सफल नहीं हो पायी ।''[२]

तहमीना और जमशेद में हमेशा अनबन रहती है। जमशेद को तहमीना का सुंदर दिखना, किसी के साथ बात करना पसंद नहीं है। जमशेद उसपर अपना अधिकार बताता हैं लेकिन उसके मन का, उसकी जरूरतों का कभी ख्याल नहीं करता । पति, बच्चा होने के बावजूद तहमीना खुद को अकेला महसूस करती है। " कभी कभी उसके मन में आता है, अक्सर ऐसी रातों के बाद, कि वह कहीं चली जाये, दूर ...

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०१।*

२ *वही, पृष्ठ १०३।*

अनजानी राह की ओर ।''[१]

अनमेल विवाह के कारण तहमीना का पूरा जीवन नरक बन जाता है। उसे जीवनभर घुटना पड़ता है। उसकी इसी मजबूरी और कमजोरी का फायदा उठाकर तुषार उसे बहकाने में कामयाब होता है। पति की ओर से निराश तहमीना तुषार को अपना तन-मन समर्पित करती है, जिसके कारण उसका जीवन और भी दर्दनाक बन जाता है।

४.५.१.३ *अंतर्जातीय विवाह की समस्या -*

" अपनी जाति से बाहर किया गया विवाह प्रय: अंतर्जातीय विवाह कहलाता है।''[२] वर्तमान युग में अतंर्जातीय विवाहों का विकास हो रहा है। किन्तु समाज आज भी अंतर्जातीय विवाहों को स्वीकार नहीं कर रहा है। सुंदरता और गुणों से प्रभावित स्त्री-पुरूष के मध्य प्रेम पनपता है। ऐसे समय जाति की दीवारें रोक नहीं पाती और प्रेमी युगल अन्तर्जातीय विवाह करते हैं। भारतीय जाति प्रथा में विवाह के बंधन कठोर है। विवाह करना है तो जाति-पाति में ही करना पड़ता है। जाति-पाति के बंधन तोड़कर वर्तमान युग में विवाह हो रहा है, वह विवाह अन्तर्जातीय विवाह की श्रेणी में आता है। डॉ. शीलप्रभा वर्मा के मतानुसार - " आधुनिक युग में अंतर्जातीय विवाहों का प्रचलन बढ़ चुका है। इसका कारण पाश्चात्य शिक्षा, सहशिक्षा, समानता की धारणा, राष्ट्रीय आंदोलन, वैज्ञानिक शिक्षा, औद्योगिकरण और नगर संस्कृति, महिला आंदोलन, ब्रह्म और आर्य समाज

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ८२।*

२ *डॉ. नीता रत्नेश - भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी, पृष्ठ २२४।*

के प्रभाव तथा वरमूल्य प्रथा का कटू रूप आदि है। अन्तर्जातीय विवाह से अनेक लाभ हैं। वह जातिवाद को दूर करने में सहायक है। दहेज प्रथा को रोकने में सहायक है, योग्य जीवनसाथी के चुनाव में सहायक है तथा बालविवाह एवं विधवा विवाह की समस्याओं का हल है। इस प्रकार अन्तर्जातीय विवाह अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं को दूर करने में सहायक सिध्द हुआ है।''[१]

' अकेला पलाश ' उपन्यास में नाहिद अंतर्जातीय विवाह करती है। वह मुसलमान है जो उसके प्रेमी डॉ. महेश अग्रवाल हिंदू है। दोनों की जाति अलग-अलग होने के कारण दोनों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। नाहिद के अब्बा इस विवाह से इन्कार करते है जिसके कारण नाहिद को अपना घर त्यागना पड़ता है। डॉ. अग्रवाल की माँ को भी यह विवाह पसंद नहीं है। अपने बेटे की जिद के खातिर वह नाहिद को अपनी बहू स्वीकार तो कर लेती है लेकिन उसे हर वक्त ताने देती रहती है, उसके हाथ का पानी तक नहीं पीती । नाहिद को इस विवाह की पूरी कीमत चुकानी पड़ती है। जिन सपनों को लेकर उसने यह विवाह किया था, वह सारे सपने जातियता के यथार्थ के सामने झूठे साबित होते है। वह अपनों के प्यार के लिए जीवनभर तरसती रहती है। नाहिद कहती है - ' कुत्तो से भी बुरी गत हो गयी है मेरी । उठते-बैठते ताने सुन-सुनकर कान पक गये हैं । छुआछूत इतना मानती है कि बस,मैं मुसलमान लड़की हूँ, इससे मेरे हाथ का छुआ नहीं खातीं। मेरी रसोई अलग है, उनकी

---

१ *डॉ. शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृष्ठ ६६।*

अलग है। एक घर में दो चूल्हें हैं। ''[१]

४.५.१.४ *कुलगोत्र की समस्या* -

अपनी जाति को दूसरों की जाति की तुलना में श्रेष्ठ मानना मनुष्य जाति का स्वभाव है। इसी भावना से प्रेरित होकर बिरादरी के लोग अपनी जाति के धर्म एवं सम्प्रदाय के लोगों को अन्य सम्प्रदायों की तुलना में श्रेष्ठ मानते हैं। डॉ. महीपसिंह के मतानुसार - " जब एक सम्प्रदाय अपने आपको और अपनी पम्पराओं को दुसरे से श्रेष्ठ समझता है और दूसरे सम्प्रदाय के प्रति घृणा को बढ़ावा देता है तो इससे सांप्रदायिकता का संघर्ष बढ़ जाता है। ''[२]

कुलगोत्र के इसी मिथ्या अभ्मिान के कारण नाहिद का जीवन दु:ख का बोझ बनता है। नाहिद मुसलमान होकर डॉ. महेश अग्रवाल से जो जाति से हिंदू है, विवाह करना चाहती है। लेकिन धर्म के व्यर्थ अभिमान की कल्पना के कारण उनके अब्बा उसे घर से निकाल देते है। ससुराल में भी नाहिद को अपमान और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। महेश की माता को अपने हिंदू होने का बड़ा ही गर्व है, जिसके कारण वह नाहिद को हमेशा ताने देती रहती है, उसका अपमान करती है। वह नाहिद को अपने से निम्न स्तर की मानती है और इसी कारण वह नाहिद का तिरस्कार करती है, उसके हाथ का छुआ पानी तक नहीं पीती । कुलगोत्र के इस झूठे अहंकार के कारण नाहिद का जीवन बेबस और लाचार बन जाता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १७१।*

२ *सं.डॉ. महीप सिंह - संचेतना, जून १९८४।*

नाहिद एक डॉक्टर होने के बावजूद, उच्चशिक्षित होने पर भी उसे निम्न जाति की होने के कारण उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। कुलगोत्र की इस समस्या के कारण नाहिद को मायके और ससुराल से नफरत मिलती है, उसे अपनों के प्यार, स्नेह,ममता के लिए तरसना पड़ता है। जमशेद के शब्दो में - " ऐसी शादियाँ खतरनाक मोड़ ले लेती हैं, हिंदू-मुस्लिम दंगे तक हो जाते है।"[१] ' अकेला पलाश ' में कुलगोत्र की समस्या का पर्याप्त चित्रण किया गया है।

४.५.१.५ *बिगड़ते दाम्पत्य जीवन की समस्या* -

वैवाहिक जीवन सुखदायी होने के लिए पति-पत्नी दोनों में प्रेम, सामंजस्य की नितांत जरूरत होती है। दाम्पत्य जीवन के बारे में कमला सिंघवी का कहना है - " दाम्पत्य जीवन का अपूर्व माधुर्य प्रीति संचित निधी है। इसे बहुत संभालकर रखना चाहिए क्योंकि यह विरल दृष्टि एक अनुपम बाँध है। "[२] सफल दाम्पत्य जीवन का उत्तरदायित्व पति-पत्नी दोनों पर समान रूप से निर्भर है। प्राय: असफल दाम्पत्य जीवन के लिए दोषी पत्नी को ही माना जाता है। एक बार दाम्पत्य जीवन में कलह का प्रवेश हो जाता है, तो पति-पत्नी दोनों का जीना बड़ा मुश्किल बन जाता है।

आज का दाम्पत्य जीवन कुंठित एवं कलहपूर्ण है। पत्नियाँ पढ़ी-लिखी एवं समृध्द परिवारों की होती है, तो यह समस्या पैदा होती है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०६।*

२ *कमला सिंघवी - नारी भीतर और बाहर, पृष्ठ ८, सं. १९८५।*

कभी-कभी माता-पिता लड़की की इच्छा के प्रतिकूल किसी व्यक्ति के साथ विवाह कर देते हे, अत: वह उस व्यक्ति को शरीर-समर्पण तो करती है, पर हृदय से प्रेम नहीं करती । " वर्तमान समाज व्यवस्था में दाम्पत्य संबंधों के रीतने, दरकने, टूटने और चुकने के बहुविध कारण है कहीं उसका कारण पति पत्नी के बीच किसी तीसरें की उपस्थिति है, कहीं इस उपस्थिति का शक मात्र है, कहीं उसका कारण अत्याधुनिक जीवनशैली है, कहीं पत्नी की नौकरी, कहीं अतृप्त काम तो कहीं एक दूसरे से बहुत अधिक अपेक्षाएँ, कीं नारी का व्यक्ति स्वातंत्र्य तो कहीं और कुछ ।''[१]

पति का प्रेम पाने के लिए नारी कुछ भी करने के लिए तैयार रहती है। लेकिन कभी-कभी उन दोनों के बीच की दूरियाँ मिटती ही नहीं हैं। दिन-प्रति-दिन पत्नी पति-प्रेम के लिए तरसती है। पुरूष नारी-पर अत्याचार करता है, फिर भी नारी सबकुछ चुपचाप बर्दाश्त कर लेती है। वह पति से सच्चा प्रेम पाने के लिए तड़पती रहती है। स्त्री पति या प्रेमी का सच्चा प्रेम चाहती है। यदि उसकी यह कामना पूरी नहीं होती तो वह लगभग पागल बन जाती है, किसी का प्रेम पाने के लिए तरसती रहती है।

' अकेला पलाश ' उपन्यास के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज ने नायिका तहमीना और उसके पति जमशेद के बिगड़ते दाम्पत्य जीवन की विड़म्बना को प्रस्तुत किया है। तहमीना और जमशेद की उम्र में काफी अंतर है। इस इनमेल विवाह के कारण जमशेद तहमीना को ठीक तरह से समझ नहीं पाता है। तहमीना समाजसेविका है, उसे कभी भी आदिवासी क्षेत्रों में निरीक्षण के लिए जाना पड़ता है, कभी-कभी घर वापस आने में देर होती है, लेकिन जमशेद उसकी मजबूरी समझना नहीं चाहता है।

---

१ *डॉ. पुष्पपाल सिंह - समकालीन हिंदी कहानी, पृष्ठ १२२, सं.१९८७।*

तहमीना अपेक्षा करती है कि जमशेद उसे साथ दे । लेकिन जमशेद उसे मदद करने के बजाय उसपर शक करता है, उसपर बंधन डालता है। जमशेद नपुंसक पुरूष है वह तहमीना की शारीरिक जरूरतो को पूरा नहीं कर सकता। इन सब बातों के कारण तहमीना और जमशेद में दरार पैदा हो जाती है।दोनों एक घर में रहते हुए भी मन से कोसों दूर है। तहमीना अपनी ओर से इस दूरी को खत्म करने की पूरी कोशिश करती है,मगर इसमें वह असफल रहती है। उन दोनों के दाम्पत्य जीवन का बिखराव दिनोंदिन बढ़ता ही जाता है। तहमीना अपने बारे में सोचती है - " उसका जीवन भी कैसा है, वह इस घर में सफल गृहिणी है, सफल माँ है, पर वह चाहकर भी सफल पत्नी नहीं बन पाई। चाहकर भी वह जमशेद को कभी पूर्ण रूप में, मन से, तन से जमशेद को पति नहीं मान पायी । जमशेद की यही कमजोरी दोनों के बीच हमेशा दीवार बनी रही।"[१]

तहमीना जमशेद के साथ अपने मन को मारकर जीवन बिताती है। जमशेद तहमीना की कोई भी इच्छा पूरी नहीं कर पाता है, जिसके कारण दोनों में तनाव का वातावरण निर्माण होता है, तहमीना को अकेलापन और कुण्ठा का सामना करना पड़ता है। उन दोनों के दाम्पत्य जीवन के बिखराव का फायदा तुषार उठाता है। तहमीना अपने दुःखी दाम्पत्य जीवन के कारण कमजोर क्षणों में तुषार को समर्पित होती है, जिसके कारण उन दोनों की दूरियाँ और भी बढ़ जाती है, जो कभी मिट नहीं पाती। तहमीना जीवनभर प्रेम को पाने के लिए तरसती रहती है, वह तुषार से कहती है - " औरत बहुत भूखी होती है, वह कहीं न कहीं से

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ८२।*

प्यार चाहती है, ममता चाहती है और मुझे कहीं से कुछ नहीं मिला ।''[१]

टूटते हुए दाम्पत्य जीवन का मार्मिक चित्रण लेखिका ने तहमीना और जमशेद के माध्यम से सफलता से किया है।

४.५.१.६ *कम उम्र में होनेवाले विवाह की समस्या -*

भारत में प्राचीन काल से बाल-विवाह की कुप्रथा चलती आ रही है। समाज-सुधारकों के कार्य के कारण बहुत बड़ी मात्रा में बालविवाह का प्रचलन नष्ट हो गया है। लेकिन आज आधुनिक काल में भी कहीं कहीं बालविवाह किये जाते है। इसका ज्यादातर प्रचलन मुस्लिम समाज में पाया जाता है।

तहमीना की माँ अपने स्वार्थ के लिए तहमीना विवाह पंद्रह साल की आयु में एक ऐसे व्यक्ति के साथ करती है, जो उसके पिता की उम्र का है। अभी तहमीना छोटी है, उसका शरीर भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है कि माँ उसे विवाह के बंधन में बाँधती है।

कम उम्र में विवाह होने के कारण तहमीना को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जमशेद उम्र में तहमीना से काफी बड़ा होने के कारण वह उसकी मानसिकता को समझ नहीं पाता, उसकी इच्छा, अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाता । तहमीना हर क्षण यह महसूस करती है - " जमशेद एक ऐसे रोशनदान है जिन्हें उसके नन्हे हाथ कभी नहीं छू सके। वह सारी उम्र एड़िया उचका-उचकाकर उन्हें छूने भर की

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १३७।*

कोशिश करती रही पर इसमें वह कभी सफल नहीं हो पायी।"[१]

कम उम्र में किये गये विवाह के कारण तहमीना का वैवाहिक जीवन असफल बन जाता है, जिसका परिणाम उसे जीवनभर सहना पड़ता है।

' अकेला पलाश ' मे मेहरुन्निसा जी ने कई वैवाहिक समस्याओं का चित्रण किया है, जिसके कारण विवाह असफल बन जाते हैं और पति-पत्नी को, ज्यादातर पत्नी को कुण्ठा, अकेलेपन, निराशा आदि का सामना करना पड़ता है।

४.५.२ *नारियों की समस्याएँ* -

वास्तव में पुरूष और नारी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। नारी पुरूष की प्रेरणाशक्ति है। वह जन्मदात्री एवं अन्नपूर्णा है। कन्या, बहन, पत्नी, माँ बनकर वह पुरूष के जीवन को परिपूर्ण बनाती है।

आधुनिक युग में नारी सुधार के अनेक प्रयत्न हो गये । ब्राह्मोसमाज, प्रार्थना समाज,आर्य समाज आदि के प्रयत्नों से नारी का उत्थन होने लगा। कानून के योगदान से कन्या को माँ-बाप की जायदाद की और पत्नी को पति की जायदाद की उत्तराधिकारिणी माना जाने लगा । आज नारी सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, तकनिकी क्षेत्रों में अग्रसर रही हैं। नारी ने अपने बुध्दि बल से यह सिध्द करके दिखाया है कि वह हर क्षेत्र में पुरूष से भी आगे बढ़ सकती है। आज नारी पढ़-लिखकर ' स्वयंसिद्धा ' बन चुकी है। " आधुनिक भारतीय उत्थान

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०३।*

काल में समाज सुधारकों तथा उपन्यासकारों ने अगर किसी समस्या को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और गंभीर समस्या के रूप में उठाया है तो वह है नारी समस्या।''[१] समाज में परिवर्तन होने के बावजूद और कुछ हद तक नारी की दयनीय अवस्था सुधरने के बाद भी आज नारी के सामने अनेक समस्याएँ हैं।

मेहरुन्निसा परवेज खुद एक नारी होने के कारण नारी के दु:खों को, उसकी समसयाओं को उन्होंने बहुत नजदीक से अनुभव किया है। खुद एक नारी होने के कारण नारियों की समस्याओं का चित्रण उन्होंने मार्मिकता से किया है।

४.५.२.१ *नौकरीपेशा नारियों की समस्या* -

आज के संघर्षमय युग में आर्थिक गुत्थी सुलझाने के लिए महिलाएँ नौकरी कर रही हैं। नौकरी पेशा नारी के बारे में डॉ. रोहिणी अग्रवाल लिखती है - " गृहस्थी से यान, यान से राष्ट्र परिचालन तक के गुरूदायित्वों को सफलतापूर्वक निभानेवाली नारी, संध्यासमय दफ्तरों-फैक्टरियों से निकलती, भीड़ में आत्मविश्वासपूर्वक अपना रास्ता बनाती, मरीजों की परिचर्या उद्घाटित करनेवाली नारी के कंधेपर झूलता बड़ा-सा पर्स उसकी आर्थिक स्वतंत्रता की उद्घोषणा जान पड़ता है।''[२]

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने नौकरीपेशा नारी की विड़म्बना को बारीकी से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका तहमीना

---

१ *डॉ. वैजनाथ प्रसाद शुक्ल - भवगतीचरण दर्मा के उपन्यासों में युगचेतना, पृष्ठ ७१।*

२ *डॉ. रोहिणी अग्रवाल - हिंदी उपन्यासों में क़ामकाजी महिला, पृष्ठ १०।*

समाज सेविका है। उसे अपने काम के कारण आदिवासी क्षेत्रों में जाना पड़ता है, अपने काम को पूरा करते-करते कभी उसे घर आने में देर हो जाती है। तहमीना इन सारी समस्याओं के कारण घुटन महसूस करती है। नाहिद उसे समझाती है - " तुम्हें यह सहना होगा, वरना तुम भी सैंकड़ों, हजारों, करोड़ों औरतों की तरह सिर्फ एक बीवी बनकर दम तोड़ दोगी । और तुम्हें यह नहीं करना है, तुम्हें इस दायरे से बाहर आना है और इस टेन्शन को बर्दाश्त करना है। तुम एक हो पर तुम्हें कई की ड्यूटी निभाना है और निभाना होगा ।"[१]

' अकेला पलाश ' में नौकरी करनेवाली विधवा तथा परित्यक्ता नारियों की समस्याओं की ओर भी निर्देश किया गया है। दुलारीबाई को जहाँ वो काम करती है वहाँ का ग्रामसेवक अपने साथ संबंध बनाये रखने पर मजबूर करता है क्योंकि वह विधवा है।

यदि नौकरी करनेवाली स्त्री निम्न जाति की हो तो उसे इन सारी समस्याओं के साथ जातियता का भी सामना करना पड़ता है।

इस तरह यदि आज की आधुनिक स्त्री शिक्षा लेकर घर की चार दीवारों को त्यागकर खुद को साबित करने के लिए खुली हवा में विवरण कर रही है लेकिन उसकी समस्याएँ खत्म नहीं हुई, बल्कि सिर्फ उनका स्वरूप बदल गया है। नौकरी करते समय नारी को किसतरह समाज और घर का मुकाबला करना पड़ता है, इसका चित्रण मेहरुन्निसा जी ने बड़ी ही मार्मिकता के साथ ' अकेला पलाश ' में किया है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश , पृष्ठ ३३।*

४.५.२.२ *आर्थिक स्वायत्तता की समस्या -*

नारी का व्यक्तित्व धीरे-धीरे सबल हो रहा है। उसे अपने अधिकारों की पहचान हुई है। अब नारी ने पूरी तरह जान लिया है कि उसकी अवनति और पराभव का मूल कारण उसकी आर्थिक पराधीनता है और इसीकारण नारी आज स्वतंत्र रूप से अपनी आजीविका के साधन ढूँढ़ती है। वह नौकरी करती है। " नारी की आर्थिक परिस्थिति उसे विवश बना देती है। उसे आरंभ से ही हीन परिस्थितियों में पड़कर दुसरों के भरोसे रहना पड़ता है। "[१]

नारी की आर्थिक स्थिति के बारे में श्रीमती सावित्रीदेवी वर्मा कहती है - " लाचारी...केवल पुरूष के लिए तथा स्त्री के लिए भी सम्मानजनक नहीं है। स्त्री-पुरूष एक दूसरे के सच्चे मित्र और पुरक तभी हो सकते है जब दोनों को लाचारी या दबाव के कारण कर्तव्य न करना पड़े, पर स्वेच्छा से दोनों अपने-अपने क्षेत्र में सम्मानजनक ढंग से फर्ज अदा करते हुए गृहस्थी की उन्नति करें । नारी की लाचारी, दुर्बलता और निर्भरता पुरूष की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है। वह तेजी के साथ आगे नहीं बढ़ पाता । एक बोझा उसे पीछे खींचता-सा रहता है। "[२] आर्थिक निर्भरता प्राप्त करने के कारण नारी में आत्मसम्मान, स्वाभिमान तथा व्यक्तित्व के प्रति जागरूकता आयी है। नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होकर भी उसकी समस्याएँ कम नहीं हुई है, सिर्फ उन समस्याओं का स्वरूप बदल गया है। उमेश माथुर जी कहते है - " आर्थिक बोझ के सँभालनेपर भी आज उसके (नारी के) प्रति पुरूष के अन्याय, अत्याचार, पताड़ना में

---

१ *सुषमा धवन - हिंदी उपन्यास, पृष्ठ ३०१।*

२ *श्रीमती सावित्रीदेवी वर्मा - पारिवारिक समस्याएँ, पृष्ठ २०६, सं. १९५७।*

कमी नहीं ।''[१]

इस उपन्यास में नारी की आर्थिक स्वतंत्रता की समस्या को लेखिकाने सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

४.५.२.३ *नारी-स्वातंत्र्य की समस्या -*

आज का युग बहुत तेजी से बदला है, बदल रहा है। युग के परिवर्तन के साथ देश में सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आज समाज में महिलाओं को सभी क्षेत्र में समानाधिकार प्राप्त है। आज भी पुरूषशासित समाज में वैसे पुरूष और स्त्री में कोई मौलिक असमानता नहीं है,दोनों भी मानव है। स्त्री और पुरूष की प्रकृति और स्वभाव में थोड़ा-बहुत अंतर हो, पर उनके संस्कार और उनकी सामाजिकता एक ही स्तर पर आधारित है। फिर भी वास्तविक रूप से समाज में पुरूष जैसा स्थान नारी को नहीं है। ऐसा माना जाता है कि स्त्री बचपन में पिता, विवाह के पश्चात पति एवं वृद्धावस्था में बेटों के संरक्षण में ही पूर्ण रूप से जीवन जी सकती है। आर्थिक दृष्टि से वह जहाँ स्वतंत्र है, वहाँ भी स्त्री-पुरूष में समानता नहीं है। सामाजिक प्रतिक्रियाएँ उसे पुरूष के बराबर समझने नहीं देती हैं। उसके स्वंतत्र अस्तित्व को पुरूष प्रधान समाज मान्यता नहीं दे पाता । वैसे तो आज स्त्रियों के लिए समाज काफी बदल गया है, लेकिन उसे व्यवहार में समान अधिकार प्राप्त नहीं है।

परम्परागत रूढ़ियों से आधुनिक नारी जैसे-जैसे मुक्त हो रही है, वैसे-वैसे नवीन समस्याओं का सामना कर रही है। पूँजीवादी संस्कृति

---

१ *उमेश माथुर - आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ, पृष्ठ २२८, सं.१९७५।*

और वैज्ञानिक सभ्यता के आगमन के बाद भारतीय विचारधारा में जो अनेक परिवर्तन हुए, उनमें नारीविषयक दृष्टिकोण में परिवर्तन क्रान्तिकारी और महत्त्वपूर्ण है। रामरतन भटनागर ने कहा है - " वास्तव में बीसवीं शताब्दी नारी-जागरण की शताब्दी रही है और नारी की मुक्ति में ही हमारे युग के महापुरूषों और साहित्यकारों ने मानव की मुक्ति की कल्पना कहीं है। "[१]

आज की नारी आर्थिक स्वावलंबिता और मानसिक स्वतंत्रता के कारण अपने जीवन को अच्छा या बुरा बनाने के लिए स्वतंत्र है। फिर भी वह पुरूष संस्कारों से घिरी हुई है। इसका एक कारण हजारों बरसों की परम्परा से पुरूष संस्कार का प्रभाव स्त्री के मानसिक संगठन का हिस्सा बनकर रह गया है। इस मानसिक गुलामी से मुक्ति पाना आसान नहीं । उसे अंतर्बाह्य स्थितियों से जूझना टूटना पड़ता है। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज में नारी को सबसे पहले उन परंपरागत मूल्यों के साथ झगड़ना पड़ता है। जिनके बोझ से दबी वह अपने स्व-निर्णय की शक्ति ही खो चुकी थी । पिछड़े समाजों की बात छोड़ भी दे तो आज हम जिसे समुन्नत समाज कहते है, वहाँ भी नारी को पुरूष के सम्मुख हीन भले ही न समझा जाये, उनके अधिकार कम अवश्य है। चाहे विवाह में वरण की स्थिति हो, चाहे नैतिकताकी,रूढ़ियों में विश्वास हो, स्त्री-पुरूष के लिए दुहरे मान वहाँ भी निर्धारित है। "[२]

' अकेला पलाश ' में हर नारी को स्वतंत्रता की समस्या का सामना करना पड़ा है। विवाह के पश्चात भी उसे स्वातंत्र्य नहीं मिल

---

१ *रामरतन भटनागर - जैनेंद्र और उनके उपन्यास, पृष्ठ ५६।*

२ *डॉ. पुष्पपाल सिंह - समकालीन हिंदी कहानी, पृष्ठ १११, सं. १९८७।*

पाता। हर बात में पति की इच्छा को अहमियत देनी पड़ती है, यहाँ तक कि खाना भी पति की पसंद का ही बनाना पड़ता है। उसे किसी के साथ खुले मन से बात करने की इजाजत नहीं है। वह अपनी मर्जी से कहीं बाहर नहीं जा सकती । खुद उसने कमाया हुआ पैसा भी वह पति की आज्ञा के बिना खर्च नहीं कर सकती है। पति के द्वारा शारीरिक और मानसिक जरूरते पूरी न होनेपर भी उसे चुप रहना पड़ता है। उसे अपनी खुशियाँ बटोरने का कोई हक नहीं है। अपने पति द्वारा, समाजद्वारा ड़ाले गये बंधनों से मुक्त होने के लिए वह छटपटा रही है लेकिन उसे आजादी नहीं मिल पाती है।

नाहिद एक डॉक्टर है। अपने परिवार का खर्चा वही चलाती है। वह आर्थिक दृष्टि से किसीपर निर्भर नहीं है लेकिन फिर भी जब वह अपनी पसंद से अपना जीवन साथी चुनती है,तो उसके अब्बा उसे घर छोड़नेपर मजबूर करते है। उच्चशिक्षित होने के बावजूद नाहिद को इतना स्वतंत्र्य भी नहीं कि वह अपने जीवनसाथी का चुनाव खुद करे ।

मीनाक्षी को यही स्वातंत्र्य पाने के लिए अपने पति का त्याग करना पड़ता है। इस तरह ' अकेला पलाश ' में हर नारी स्वंतत्रता से वंचित दिखायी देती है।

४.५.२.४ *विधवा समस्या* -

भारतीय समाज में विधवा जीवन अभिशापित है। आज समाज में नारी की अन्य समस्याओं में विधवा समस्या अधिक दर्दनाक समस्या है। ' जिस तरह भारतीय पतिव्रता स्त्री दुनिया में आदर, गौरव एवं सम्मान की वस्तु है उसी प्रकार भारतीय विधवा जैसी तुच्छ, उपेक्षित, दयनीय दुनिया

की अन्य कोई वस्तु नहीं है। ''[१] शिक्षा के प्रसार ने उसे आत्मनिर्भर बनने की शक्ति दी है। आज शिक्षा के कारण विधवा स्त्री नौकरी करती है और उसे आर्थिक दृष्टि से किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता । लेकिन समाज उसे अकेले आसानी से नहीं जीने देता उसे कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। उसे समाज की बूरी नजरों से बचना मुश्किल हो जाता है।

' अकेला पलाश ' की दुलारीबाई एक असहाय, विधवा स्त्री है। उसके बच्चे भी है। वह काम करके अपना और बच्चों का पेट पालती है। लेकिन जिस गाँव में वह काम करती है, वहाँ का ग्रामसेवक उसपर जबरदस्ती करके उसे अपने साथ संबंध बनाये रखने पर मजबूर करता है। अंत में वह ग्रामसेवक से डर कर अपनी जान बचाने के लिए किसी दूसरे गाँव में जाना चाहती है।

इस तरह औरत की असहाय और मजबूर स्थिति का फायदा उठाकर समाज उसे अपनी हवस का शिकार बनाता है। विधवा, अकेली स्त्री को समाज की बूरी निगाहों से बचना मुश्किल हो जाता है। ' अकेला पलाश ' में विधवा नारी की समस्या का मेहरुन्निसा ने गंम्भीरता से विवेचन किया है।

भारतीय समाज में परित्यक्ता नारी की दु:खद परम्परा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। ' परित्यक्ता, विवाहच्छेद के बाद कानूनी आधार से तलाक पाई हुई, वह स्त्री है जिसने कानून के सहारे या तो अपना पत्नीत्व स्वयं छोड़ दिया है या छोड़ने के लिए सहमत या विवश की गई हो। इस तरह परित्यक्ता की एक कानूनी वैध अवस्था है। विवाहिता हो

---

१ *डॉ. रेवा कुलकर्णी - हिंदी के सामाजिक उपन्यासों मेंनारी, पृष्ठ २५३।*

और विवाह संबंध कानूनी रूप से टूट चुका हो, तो उस स्त्री को परित्यक्ता कहेंगे।''[१] पुरूष प्रधान समाज में पुरूष कभी अपनी गलतियों की ओर देखना ही नहीं चाहता है,उन्हें मासूम नारी पर उसमें कोई कमी न होनेपर भी उसे ही दोष देता रहता है। यह अन्याय है, यह जानकर भी बेचारी नारी कछ न कहते हुए चुपचाप सह लेती है। अपनी बेगुनाही के बारे में कुछ भी नहीं कह पाती है।

' अकेला पलाश ' मे मेहरुन्निसा ने परित्यक्ता नारी की समस्या का भी चित्रण किया है।

तरू ऐसी ही एक परित्यक्ता नारी है। वह अपने पति का घर डोड़कर आयी है और कुछ कारणवश उसने अपने माता-पिता का घर भी त्याग दिया है। उसके दो बच्चे भी है। वह अकेली ही अपने बच्चों के साथ शहर में रहती है। पहले तो वह अपना रास्ता भटक जाती है। लेकिन तहमीना के समझानेपर विपुल से शादी करने के लिए तैयार हो जाती है। ' अकेला पलाश ' में परित्यक्ता नारी की समस्या का चित्रण बहुत कम मात्रा में प्राप्त होता है।

४.५.२.६ *अविवाहित नारी की समस्या* -

प्राचीन काल में भारतीय समाज ने नारी को हमेशा उपेक्षित रखा था। अर्थाभाव के कारण स्त्री हमेशा पुरूषों के बंधनों में बंधी है। वर्तमान युग में कानून के कारण परिवर्तन हुआ है। आज के युग में नारी

---

१ *डॉ. रेवा कुलकर्णी - हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, पृष्ठ २५३।*

पुरूष के बंधन में रहना पसंद नहीं करती । मेहरुन्निसा परवेज ने अविवाहित नारी का मार्मिक ढंग से चित्रण किया है।

अविवाहित नारी को किन सनस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसका चित्रण मेहरुन्निसा बने ' अकेला पलाश ' में किया हैं। नाहिद एक डॉक्टर है। उच्चशिक्षित और इतनी ज्यादा आयु होने के बाद भी वह अविवाहित है। अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए उसने अभी तक विवाह नहीं किया है। नाहिंद द्वारा डॉक्टर खान को ठुकराये जाने पर वह उसकी बदनामी करते फिरते है। लोगों के ताने सुनने पड़ते है, जिसके कारण नाहिद को मानसिक कष्ट उठाने पड़ते है।

अविवाहित नारी को समाज की बूरी निगाहों का सामना करना पड़ता है, जिससे वह आहत होती है। ' अकेला पलाश ' में अविवाहित नारी की समस्याओं का वास्तविक चित्रण मिलता है।

४.५.२.७ *बलात्कारी नारियों की समस्या* –

पुरूष की कामुकता और नारी की असहायता एवं प्रथा-परम्पराओं के खोंखले मानदण्ड आदि के कारण नारी बलात्कार की शिकार होती है। बलात्कार के संदर्भ में नारी पीसती आयी है। नारी अबला होने के कारण अत्याचार का सदैव शिकार बनती है। मेहरुन्निसा जी के – ' अकेला पलाश ' में कई बलात्कारी नारियों का उनकी समस्याओं का चित्रण मिलता है।

तहमीना पर उसके पिता के मित्र ही उसकी माँ की मौजूदगी में उसपर बलात्कार करते है। जिसके कारण तहमीना को न चाहते हुए भी उम्र मे अपने से काफी बड़े और नापसंद जमशेद के साथ विवाह करना

पड़ता है। इतनी कम उम्र में किये गये इस अनमेल विवाह के कारण तहमीना का पूरा जीवन बरबाद हो जाता है।

इसी उपन्यास की विमला पर खुद उसका प्रेमी ही बलात्कार करता है, जिसके साथ वह अपना घर-परिवार छोड़कर विवाह करने का सपना लेकर भाग आयी है। विमला को जीवनभर बलात्कार के कलंक को सहना पड़ता है।

नाहिद के अस्पताल में डॉक्टर नर्सोंपर बलात्कार करते है, तहमीना जिस क्षेत्र में काम करती है, वहाँ पर भी अनेक नारियों को बलात्कार की शिकार होना पड़ता है, जिसके कारण इन नारियों का जीवन एक दर्दनाक कहानी बनता है। बलात्कारी नारियों की भयानक समस्याओं का चित्रण ' अकेला पलाश ' में सूक्ष्मता से किया गया है।

४.५.२.८ *अशिक्षित नारी की समस्या* -

जब समाज अधिक शिक्षित होता है, तब उतनाही सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील होता है। अशिक्षा के कारण समाज में अंधविश्वासों, परम्पराओं एवं अज्ञानजनित उपकर्मों की उन्नति होती है। पति अच्छा हो तो यह भी ठीक है लेकिन यदि पति ही चारित्र्यहीन हो, शराबी हो तो पत्नी के लिए और भी मुश्किल हो जाती है। मेहरुन्निसा जी ने अशिक्षित नारी का चित्रण और उसकी समस्यओं का वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में किया है।

तहमीना की माँ अशिक्षित नारी है। उसके पति का सारा वक्त अय्याशी में ही जाता है। उन दोनों में हमेशा झगड़े होते रहते है। अशिक्षित होने के कारण उसे आर्थिक दृष्टि से पति पर निर्भर रहना पड़ता है और इसीकारण उसे अपने पति के अत्याचारों को मजबूर होकर सहना

पड़ता है। अपने संसार को बचाने के लिए उसे अपनी बेटी की कुर्बानी देनी पड़ती है। तहमीना अपनी माँ के बारे में कहती है - " वह एक अनपढ़ औरत थी, जिनका दायरा सिर्फ पति के इर्द-गिर्द घूमता था। सारा जीवन उन्होंने पति को घर लौटा लाने के चक्कर में ही काट दिया । हर समय अपना स्थान छिन जाने का उन्हें भय रहा, हमेशा यह भय रहा कि पिताजी उनके स्थानपर किसी दुसरी स्त्री का न ले आयें । औरत जीवन में हर चीज त्याग सकती है, पर वह दूसरी स्त्री को बर्दाश्त नहीं कर सकती ।"[१]

सिर्फ अशिक्षित होने के कारण तहमीना की माँ को इसतरह का लाचार और दर्दनाक जीवना बिताना पड़ता है। अपने पति के अन्याय को सहना पड़ता है। अशिक्षित स्त्री को कोई महत्त्व नहीं होता, उसे चुपचाप सब कुछ सहना पड़ता है। ' अकेला पलाश ' में ज्यादातर नारी नात्र शिक्षित होने के कारण अशिक्षित नारी की समस्या का चित्रण बहुत कम परिलक्षित होता है।

४.५.२.६ *उच्चशिक्षित नारी की समस्या* -

तहमीना उच्चशिक्षित है, वह एक समाज सेविका है लेकिन फिर भी उसका पूरा जीवन एक दर्दभरी कहानी है। उच्चशिक्षित होने के बावजूद न तो उसे कोई अधिकार है, न ही कोई स्वतंत्र्य । पति के सामने उसे हमेशा दबकर रहना पड़ता है। वह उच्चशिक्षित होने के कारण उसका पति उसे जलता है, इर्ष्या करता है। उसका किसी के साथ बात करना भी

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०३।*

उसे पसंद नहीं है। तहमीना को उच्चशिक्षित होने के बावजूद भी बंधनों में घुटना पड़ता है।

नाहिद डॉक्टर है, वह एक अस्पताल में नौकरी करती है। उसके परिवार की जिम्मेदारी उसीपर है, जिसके कारण वह उचित समय पर विवाह नहीं कर पाती है। जब वह अपनी पसंद से जीवनसाथी चुनती है तो उसके अब्बा उसका विरोध करते है।

इस तरह नाहिद और तहमीना को उच्च शिक्षित होने के बावजूद सामान्य नारियों की तरह घुटना पड़ता है। उच्चशिक्षा उनके लिए वरदान न होकर शाप साबित होता है। ' अकेला पलाश ' में उच्चशिक्षित नारी की समस्याओं का बहुत ही बड़ी मात्रा में चित्रण पाया जाता है।

४.५.२.१० *स्त्री का कुण्ठाग्रस्त जीवन -*

" किसी घटना की अथवा परिस्थितियों की विषमता या अतृप्त आकांक्षाओं आदि के कारण पात्रों के मनपर ऐसा आघात पड़ता है कि उनका स्वाभाविक रूप दब जाता है और उनका व्यवहार अस्वाभाविक हो उठता है। ये पात्र कुण्ठित कहलाते है। उनके व्यवहार के मूल में कुण्ठा काम करती है।''[१]

मेहरुन्निसा परवेज के ' अकेला पलाश ' में चित्रित अधिकतर नारी पात्र कुण्ठित ही है। जीवन का सुख क्या होता है, तहमीना नहीं जान पाती और पति-बच्चा होने के बावजूद भी वह खुद को अकेला महसूस करती है। उसकी कमजोरी का फायदा उठाकर तुषार उसे बहकाने में सफल होता है। तुषार के बीच में ही उसे छोड़कर जाने के कारण वह टूट जाती है, अपने

---

1 *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २११।*

जीवन से और भी निराश हो जाती है। इन सारी घटनाओं का उसके जीवन पर बुरा असर पड़ता है। जीवन में उसे झूठ, फरेब और धोखा ही मिलता है, उसके अपने ही उसे स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करते है जिसके कारण उसे कुण्ठा का सामना करना पड़ता है।

नाहिद अपने पिता का घर त्यागकर अन्तर्जातीय विवाह करती है। लेकिन विवाह के बाद उसे वह सुख नहीं मिल पाता जिसकी उसे अपेक्षा थी। हरवक्त घर में तनावभरा माहौल, सास के ताने, छुआछूत आदि के कारण वह अपने जीवन से निराश हो जाती है और उसे भी कुण्ठाग्रस्त जीवन का सामना करना पड़ता है।

लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में कुण्ठित नारी की मानसिकता का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

४.५.२.११ *प्रेम में गृहत्याग की समस्या -*

डॉ. राजरानी शर्मा के मतानुसार - " प्रेम का अर्थ नारी और पुरूष के लिए समान नहीं होता। पुरूष प्रेम का प्रतिदान चाहता है किन्तु नारी खुद को भूल जाती है। स्त्री के जीवन में शारीरिक प्रेम की कोई बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं होती । एक स्त्री के लिए वह प्रेम अधिक महत्त्वपूर्ण होता है जो शारीरिक प्रेम से पर होता है। "[१] प्रणय में गृहत्याग की समस्या आजकल तो विकट रूप धारण कर रही है। नारी तब प्रेमी के साथ भाग जाती है तब भागने के दुष्परिणामों का भी नारी को सामना करना पड़ता है। इस दुष्परिणामों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया गया हैं ।

---

१ *डॉ. राजरानी शर्मा - हिंदी उपन्यासों में रूढ़िमुक्त नारी, पृष्ठ ५१।*

नाहिद भी डॉ. महेश अग्रवाल के साथ अपने पिता का घर छोड़कर विवाह करती है। ससुराल में भी उसे सास के ताने और जातीयता की समस्या का सामना करना पड़ता है। मायका और ससुराल दोनों जगहों से नाहिद को नफरत ही मिलती है। जिस खुशी को पाने के लिए नाहिद ने पिता का घर त्याग दिया था वह तो उसे कभी नहीं मिल पाती है। अपनों के प्रेम, स्नेह, ममता के लिए वह तरसती रहती है। उसके सारे सुंदर सपने टूट जाते है। उसे पश्चाताप होने लगता है लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती है। उसके निर्णय की सजा उसे जीवनभर सहनी पड़ती है। उसके सारे सपने झूठ निकलते है - " बेचारी नाहिद बाजी! कितने अरमानों से उन्होंने सारी बदनामी सहकर कोर्ट में मैरिज की पर सारे अरमान तिनकों की तरह उड़ गये "[१] ' अकेला पलाश ' में प्रेम के कारण गृहत्याग करनेवाली नारी की समस्या का यथार्थ चित्रण दृष्टिगोचर होता है।

मेहरुन्निसा परवेज ने ' अकेला पलाश ' में मध्यवर्गीय नारियों की कई समस्याओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

४.५.३ अन्य समस्याएँ -

४.५.३.१ राजनीति में शीलभ्रष्ट नेताओं की समस्या -

राजनीति में शीलभ्रष्ट नेताओं की समस्या स्वातंत्र्योत्तर काल की जटिल समस्या बन गई है। स्वतंत्रतापूर्व काल में देश की सेवा करना एक व्रत माना जाता था। स्वतंत्रता के पूर्व के साहित्य में स्वतंत्रता प्राप्ति

---

१ मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २१२।

हेतु अनेक विचारधाराओं को अभिव्यक्ति मिली है। वर्तमान युग में राजनीति में समाजसेवा की अपेक्षा स्वार्थलोलुपता की अधिकता है। आज राजनीति में नेता बेदाग नहीं मिलता । आधुनिक युग में शीलभ्रष्ट नेताओं की संख्या बढ़ गई है।

मेहरुन्निसा ने - ' अकेला पलाश ' में इस तरह के शीलभ्रष्ट नेताओं का चित्रण किया है। इन नेताओं का यही काम होता है कि वह समाज के दुर्बल व्यक्ति तथा नारियों की रक्षा करे । लेकिन राजनीति में कुछ ऐसे नेता भी होते है, जो ऐसी कमजोर नारियों की सहायता करने के बजाय उनकी कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर उसे अपने भोग की वस्तु मानते है। जहाँपर ऐसे शीलभ्रष्ट नेता होता है वहाँपर स्त्री को काम करना मुश्किल हो जाता है । ' अकेला पलाश ' की दुलारीबाई एक असहाय विधवा स्त्री है। वह खुद का और अपने बच्चों का पेट पालने के लिए काम करती है। वहाँ का ग्रामसेवक उसकी असहाय स्थिति का फायदा उठाकर उसे अपने साथ संबंध बनाये रखने पर मजबूर करता है और ऐसा न करने पर वह उसे जान से मारने की धमकी देता है।

' अकेला पलाश ' में लेखिका ने समाज में स्थित शीलभ्रष्ट नेताओं की ओर निर्देश किया है।

४.५.३.२ *हरिजन समस्या* -

" हिंदू समाज में अभी भी अछूतों को अत्यंत हेय दृष्टि से देखा जाता है। अछूत आर्थिक दृष्टि से प्राय: निर्धन होते है। उच्चवर्ग के लोग उनकी इस निर्धनता का अनुचित लाभ उठाकर उपनर तरह तरह के

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अत्याचार करते है।''[१] रामाश्रय मिश्र के मतानुसार " हरिजन शब्द का प्रयोग महात्मा गांधी जी ने किया । उनके अनुसार एक विशिष्ट जाति के लोग जो भगवान की संतान है। हरिजन समस्या धार्मिक और सामाजिक धरातल में उत्पन्न होकर मानव समाज के कुण्ठित कर देती है। इस समस्या के कारण मानव में समता के विषमता, सहयोग के स्थानपर असहयोग की भावना तग जाती है। ''[२]

हरिजनोंपर अत्याचार वर्णव्यवस्था के कारण होते हैं। मेहरुन्निसा जी ने ' अकेला पलाश ' में हरिजनों की करूण अवस्था चित्रित करके साम्प्रदायिक भेदभाव नष्ट करने का संकेत दिया है। जिस व्यक्ति के घर में हरिजन शिक्षिका रहती है उसकी बूरी निगाहों का उसे सामना करना पड़ता है। जिस आदिवासी क्षेत्र में वह काम करती है वहाँ पर अपने सहकारी तथा उससे निम्न दर्जे के लोगोंद्वारा उसे अपमानित होना पड़ता है। विमला की नजरों में हरिजन एकदम ही निम्न दर्जे के लोग है - " यह हरिजन है, इसके हाथ का छुआ हम लोग कैसे खा सकते हैं। सर्विस करने निकले हैं, तो इसका मतलब यह नही कि हम अपना धर्म भी नष्ट कर दें।''[३]

---

१ *डॉ. गोवर्धन सिंह - महादेवी वर्मा का गद्यसाहित्यः विश्लेशण और स्वरूप,पृष्ठ १२१।*

२ *रामाश्रय मिश्र - गोदानः विविध संदर्भों में, पृष्ठ ११८।*

३ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५९।*

४.५.३.३ *बेकारी की समस्या -*

आधुनिक युग की सबसे बड़ी यदि कोई समस्या है तो वह है बेकारी की समस्या। बढ़ती हुई आबादी के कारण आज यह बढ़ती हुई बेकारी एक जटिल समस्या बन गई है। इस समस्या ने आज के युवा पीढ़ी में संघर्ष, नफरत की भावना बढ़ रही है। देश में कई ऐसे लोग है, जो काबिल तो है लेकिन उन्हें उनके केई काम नहीं मिल पा रहा है। इसीकारण उनके मन में कुण्ठा निर्माण होती है। उनके मन में मस्तिष्क में विकृति पैदा होती है और इसी विकृतियों के कारण दुष्प्रवृत्तियाँ फैलती है। मेहरुन्निसा जी ने प्रस्तुत उपन्यास में विपुल के माध्यम से बेकार युवा पीढ़ी की करूण स्थिति का चित्रण किया है।

विपुल एम.एस्सी. में फर्स्ट आया हुआ लडका है। साथ ही वह एन.सी.सी. में टॉप है, खेल कूद में बढ़िया सर्टिफिकेट प्राप्त किये है लेकिल फिर भी उसे नौकरी नहीं मिल रही है। विपुल वर्ममान स्थिति की ओर निर्देश करते हुए कहता है - " मेरा फर्स्ट आना, एन.सी.सी. में टॉप लेना, खेल-कुद में बढ़िया सर्टिफिक्केट पाना सब बेकार हुआ । हाँ, लेकिन इतनी बात समझ में आ गयी कि आदमी के पास कोई सर्टिफिक्केट न हो तो चलेगा, पर सिफारिश का उत्तम सर्टिफिकेट होना जरूरी है। माँ बचपन से हमारे पीछे लगती थी बेटा अच्छा पढ़ो, अच्दा खेलो, बढ़िया हेल्थ बनाओं, पर क्या फायदा हुआ ! सारा कुछ माँ ने हमारे लिए जुटा दिया पर हमारे लिए वह सिफारिश नहीं जुटा पायी ।''[१]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ४८।*

मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में बेकारी की समस्या को मार्मिकता से चित्रित कर वर्तमान युवा पीढ़ी की असहाय अवस्था की ओर निर्देश किया है।

४.५.३.४ *भ्रष्टाचार की समस्या* -

वर्तमान युग में भ्रष्टाचार की समस्या व्यापक एवं विकराल हो गयी है। भ्रष्टाचार को बढ़ावा भौतिकवादी दृष्टि के अतिरेक के कारण और आध्यात्मिक आस्था का अभाव होने के कारण मिल रहा है। व्यक्ति की स्वार्थपरता के साथ-साथ भ्रष्टाचार भी बढ़ रहा है। मेहरुन्निसा जी ने - ' अकेला पलाश ' में मनुष्य की भ्रष्टाचार की प्रवृत्तिपर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत उपन्यास में हरक्षेत्र में भ्रष्टाचारी लोगों के दर्शन होते है।

आदिवासी लोगों की दयनीय स्थिति देखकर तहमीना सोचती है कि सरकारद्वारा जो परियोजनाएँ चलायी जाती है इससे इन बच्चों को थोड़ा-बहुत तो पौष्टिक आहार मिल जाता है। लेकिन उनके लिए यह जो योजनाएँ बनायी गयी है वह इन तक बहुत कम पहुँचती है । उसका सारा फायदा बीच के भ्रष्टाचारी लोग ही उठाते है। " सारा कुछ तो बीच के लोग ही खा जाते है। इनसे ज्यादा भूखे तो भरे पेट वाले लोग है। "[१]

आजकल कार्यालयों के नौकर भी भ्रष्ट पाये जाते है। तहमीना के आफिस का बाबू आफिस का टाइपरायटर चुराता है। अस्पताल जैसे पवित्र स्थानपर भी भ्रष्टाचार ने अपने कदम रखे है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५५।*

मेहरुन्निसा जी ने प्रस्तुत उपन्यास में **भ्रष्टाचार की गंभीर समस्या** को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

४.५.३.५ *आदिवासियों की समस्या* -

आधुनिक समाज की तुलना में आदिवासी समाज जीवन बिलकुल ही अलग होता है। इन दोनों नें काफी फासला रहा है। आधुनिक समाज की तुलना में आदिवासी समाज पिछड़ा हुआ रहता है। आदिवासी समाज में शिक्षा तथा सुख-सुविधा के भौतिक साधनों का प्रसार नहीं पाया जाता है। आदिवासियों का जीवन उन्होंने नजदीक से देखा है और उनकी समस्याओं को भी जाना है और इसीकारण शायद उनके उपन्यास में आदिवासियों की समस्याओं का मार्मिक चित्रण पाया जाता है।

आदिवासी बच्चों के लिए स्कुल खूलवाये गये है लेकिन गरीबी के कारण वह बच्चे पढ़ने के लिए नहीं आ सकते है। उन्हें इतना खाना भी नहीं मिल पाता कि वह अपना पेट भर सके । तहमीना जब निरीक्षण के लिए आदिवासी केंद्रोपर जाती है तो वहाँ के गन्दे बच्चों को देखकर सोच में पड़ जाती है -" इन्हें सुधारने नें, इन्सान बनाने में किमना समय लग जायेगा, तब भी शायद ये इन्सान नहीं बन पायेंगे; क्योंकि गरीबी, भूख, अभाव इनके नस-नस में समा गया है और उसे मिटाना नामुमकिन-सा है।"[१] तहमीना ने खुद अपनी आँखों से देखा कि आदिवासी औरतें चावल के कोंडे की रोटियाँ बनाती है।यह देखकर वह आश्चर्य में पड़ जाती है - " कोंडे की रोटी कैसे खाई जा सकती है ? क्या इन्सान अब गाय-भैंसों

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५५।*

की श्रेणी में आ गया है ? ''[१] सरकार की ओर से आदिवासी बच्चों के लिए पौष्टिक आहार दिया जाता है लेकिन वहाँपर भी भ्रष्टाचार के कारण सारा कुछ बीच के लोग ही खा जाते है। इसतरह आदिवासियों को गरीबी, भूख, अज्ञान आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'अकेला पलाश' में आदिवासियों की समस्या का मेहरुन्निसा ने सुक्ष्मता से चित्रण किया है।

४.५.३.६ *धार्मिक क्षेत्र में अनाचार की समस्या* -

आधुनिक काल में जिस तरह हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार था अनैतिकता की समस्या बढ़ रही है इस स्थिति में धार्मिक क्षेत्र भी इन समस्याओं से अछूता नहीं रह पाया है। धर्म जैसी पवित्र चीज भी आज भ्रष्ट हो चुकी है। धार्मिक क्षेत्र में आज लालच, पाखंड, दिखावा आदि प्रवृत्तियाँ फैल रहीं है। सामान्य मनुष्य धाम्रिकता के मोह में फँसकर अपना जीवन बरबाद कर लेता है। ज्यादातर स्त्रियों में धार्मिकता की अधिक प्रवृत्ति होती है और इसी अंध धार्मिकता का फायदा धर्म के क्षेत्र के कुछ लोग उठाते है। विमला के माध्यम से लेखिका ने धार्मिक क्षेत्र के बुरे व्यवहारों पर प्रकाश डाला है।

जीवन से हारी तथा प्रेमी और परिवारवालों से ठुकरायी गयी विमला धार्मिक श्रध्दा के कारण संन्यासिनी बनकर एक आश्रम में सहारा लेती है। समाज की बूरी निगाहों से बचने के लिए वह यह रास्ता अपनाती है लेकिन साधु-संन्यासियोंद्वारा ही उसपर बलात्कार किया जाता है। विमला कहती है - " वहाँ का वातावरण बहुत गन्दा था, आश्रम के नामपर ठकोसला था, संन्यास के नामपर बदमाशी होती थी । दुनियादार लोगों से

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५५।*

भी बढ़कर ये लोग सेक्सी थे। हर नयी लड़की को पहले गुरू भोगता था, फिर उसके चेले, उसके बाद दीक्षा दी जाती थी।''[१]

आजकल धार्मिक क्षेत्र में राजनीति ने प्रवेश किया है। धर्म के नामपर बड़े-बड़े कारोबार चलाये जाते है। धर्म के नामपर हर बुरा काम किया जाता है।

इस तरह लेखिका ने धर्म के पतन की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।

इस तरह मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में नारी समस्याएँ, वैवाहिक समस्याएँ तथा समाज में पायी जानेवाली विविध समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है।

निष्कर्ष -

उपन्यासकार दुनिया की समस्या को साहित्य का विषय बनाता है। वह स्वयं एक सामाजिक प्राणी होने के कारण जीवन की विविध समस्याओं और परिस्थितियों से प्रभावित होता रहता है और तभी अपनी रचनाओं में वह उस प्रभाव को प्रदर्शित करता है। आज का युग विषम समस्याओं का युग है। जैसे-जैसे परिस्थितियाँ बदल रही है, वैसे-वैसे ही अनेक नई-नई समस्याएँ मनुष्य के सामने आ रही है। मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में कई समस्याओं का चित्रण करने का प्रयास किया है, उसमें वैवाहिक समस्याएँ, नारी समस्याएँ तथा अन्य विभिन्न समस्याओं की ओर निर्देश किया गया है।

---

१ मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ६३।

' अकेला पलाश ' एक नारी प्रधान उपन्यास है और इसी कारण इसमें ज्यादात्तर नारी से संबंधित समस्याओं का हीचित्रण हुआ है। विवाह का महान आदर्श आज समाज से लुप्त हो गया है। दांपत्य जीवन का सुख आज दुर्लभ बन गया है। वैवाहिक असंगतियाँ आज घर-घर में विद्यमान है; जिन्होंने स्त्री-पुरूषों के संबंधों को विकृत तो किया ही है, समाज का शांति भी भंग कर रखी है। ' अकेला पलाश ' के अंतर्गत मेहरुन्निसा ने वैवाहिक समस्याओं में प्रेमविवाह की समस्या, अनमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह, कुलगोत्र की समस्या, बिगड़ते दांपत्य जीवन की समस्या तथा कम उम्र में होनेवाली विवाह के कारण निर्माण होनेवाली समस्याओं की ओर निर्देश किया है। इन समस्याओं के कारण स्त्री-पुरूष का जीवन किस तरह बिखर जाता है इसका यथार्थ चित्रण मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में सफलता से किया है।

वर्तमान युग में नारी समस्याओं की जटिलताने नारी को चारों ओर से घेर लिया है। अतः साहित्य में नारी समस्या का चित्रण करना लेखकों के लिए स्वाभाविक हो गया है। मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में नारी की समस्याओं को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। मेहरुन्निसा खुद एक नारी होने के कारण नारी मन की गहराइयों में उतरकर नारी समस्याओं का गहन विश्लेषण करती है। नारी समस्याओं में उन्होंने नौकरी पेशा की विडम्बना, आर्थिक स्वायत्तता की समस्या, नारी स्वातंत्र्य की समस्या, विधवा समस्या, परित्यक्ता की समस्या, अविवाहित, बलात्कारी, अशिक्षित नारियों की समस्या, उच्चशिक्षित नारी की समस्या, स्त्री का कुण्ठाग्रस्त जीवन, प्रेम में घर का त्याग करनेवाली नारी की समस्या आदि का वास्तविक चित्रण ' अकेला पलाश ' में किया हैं। उन्होंने नारी दुर्दशापर केवल आँसू ही नहीं बहाएँ किन्तु उनकी सिथति सुधारने के

लिए स्वर भी बुलंद किया है। ' अकेला प्लाश ' के कई नारी पात्र समर्थ हैं जो डटकर समस्याओं का मुकाबला करते हैं किन्तु अधिकांश दुर्बल नारी पात्र है। मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन तथा उन समस्याओं का समाधान भी किया है। ' हरि अंनत हरि कथा अनंत ' की तरह नारी जीवन का दु:ख भी अनंत है यही इन समस्याओं से मेहरुन्निसा स्पष्ट करना चाहती है।

अन्य समस्याओं में शीलभ्रष्ट नेताओं की समस्या, हरिजन समस्या, बेकारी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, आदिवासियों की समस्या, धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त अनाचार की समस्या आदि सामाजिक समस्याओं का भयानक वर्तमान स्वरूप मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में मार्मिकता से प्रस्तुत किया है जो पाठक को समाज की गंभीर स्थिति के बारे में सोचने पर मजबूर करती है। ' अकेला पलाश ' विभिन्न समस्याओं को यथार्थ रूप से उजागर करने में पूर्णरूप से सफल साबित हुआ है।